नये ज़माने की
परीकथाएँ

होल्गर बुक

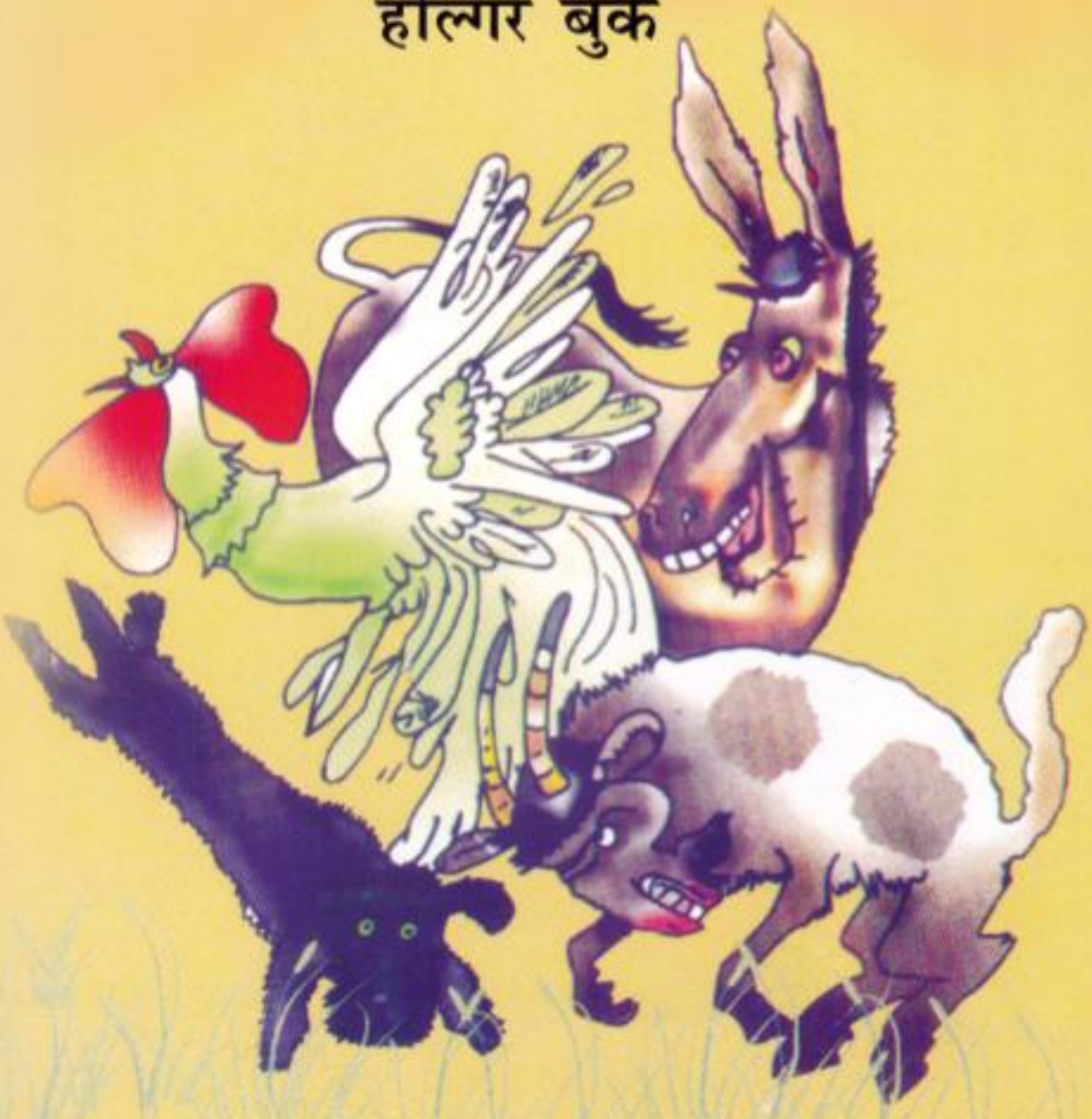

नये ज़माने की परीकथाएँ

होल्गर पुक्क

हिन्दी रूपान्तर : मीनाक्षी

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : 25 रुपये
पहला हिन्दी संस्करण 2003
पुनर्मुद्रण : जनवरी 2008
पुनर्मुद्रण : अगस्त 2012

प्रकाशक
अनुराग ट्रस्ट
डी - 68, निरालानगर
लखनऊ - 226020

लेजर टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन
मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

अनुक्रम

एक नया जानवर	5
बटन-काज (बटन-होल) पर मचा घमासान	10
तेज़ दिमाग़	15
झाड़ू और फावड़ा	19
पहिये	21

एक नया जानवर

मेढ़े ने गुलगपाड़ा मचा रखा था। वह बछेड़ी को टक्कर मारता और कुत्ते को पटक देता। कभी छुटके साँड़ को घूँसा जड़ देता तो कहीं नन्ही बछिया को घायल कर देता। उसने सचमुच नाक में दम कर रखा था। जानवरों का परिषद चकराया हुआ था, शिकायतों का जैसे कोई अन्त ही न था :

"घामड़ मेढ़ा!"

"निर्दयी जानवर!"

"बददिमाग़ कहीं का!"

"समझता क्या है अपनेआप को!"

सभी उसे देखकर नाक-भौं सिकोड़ते। उस पर उँगली उठाते। अपनी कारगुजारियों का जवाब देने, अपने लड़ाई-झगड़ों के लिए खेद प्रकट करने की ख़ातिर, मेढ़े को जानवरों के परिषद के सामने तलब किया गया।

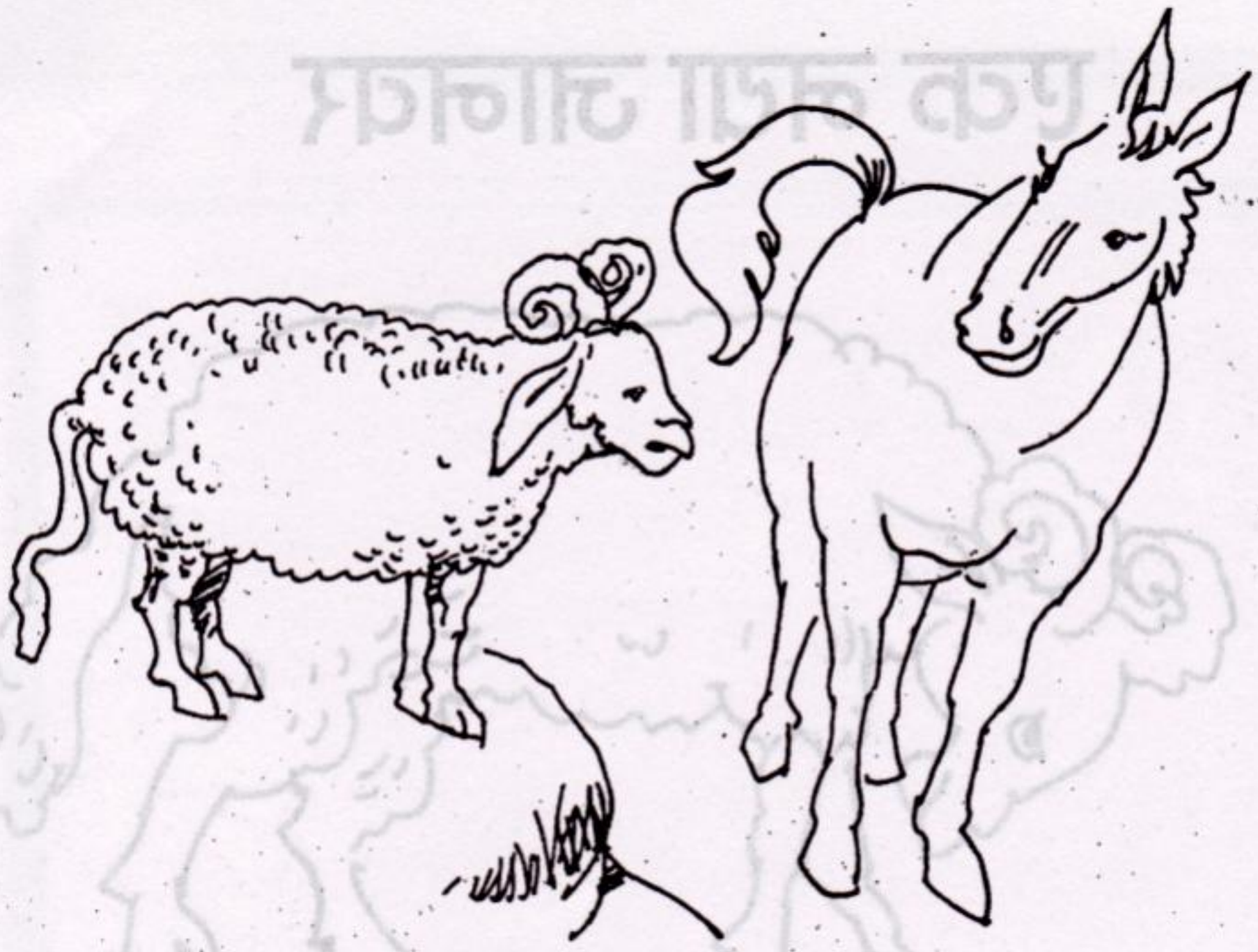

मेढ़ा आया, सचमुच दुखी लग रहा था।

"सम्माननीय परिषद, मैं क़सूरवार हूँ। मैं यक़ीनन क़सूरवार हूँ। लेकिन मुझे अपनी बात समझाने की इजाज़त दीजिये। मैं एक चिन्तक हूँ। मैं महान बातें सोचता हूँ। मैं महान योजनाएँ बनाता हूँ। इसलिए मुझे शान्त माहौल चाहिए। लेकिन भला यह मुझे मिले कैसे, जबकि पिल्ला लगातार भूँकता रहता है, बछेड़ा हिनहिनाता रहता, साँड़ हूँकार भरता और बछिया रँभाती रहती...वे मुझे चिन्तन नहीं करने देते।"

परिषद में हँसी के ठहाके फूट पड़े।

"ज़रा इस शेखीबाज़ की तो सुनो।"

"सोचो तो – एक मेढ़ा चिन्तन कर रहा है। और भला तुमने विचार किस पर किया?" परिषद ने अधिकारपूर्वक माँग की।

"तू गुस्ताख़ मेढ़ा, तुझे ख़ुद को सुधारना होगा, तुझे बिल्कुल नये सिरे से एक बढ़िया जानवर बनना होगा – दयालु, मददगार और दोस्तमिजाज़... घोड़े को देख, उनके पदचिह्नों पर चल।"

घोड़ा परिषद की सबसे ऊँची कुर्सी पर विराजमान था। वही सवाल करता और आदेश देता था। उसे दिखावे या हेकड़ीबाज़ी से नफ़रत थी। वह समय की बर्बादी या झींखना-बिसूरना बर्दाश्त नहीं कर पाता। अधीर होकर उसने अपने खुर से मेज़ थपथपाया और कहा, "यह बक-बक बन्द करो! मुद्दे पर आओ।"

कुछ एक ने बेशक, अपने होंठ भींच लिये। और ऐसे में वे कर ही क्या सकते थे। जब कि मामले को संक्षेप में रखना हो, बातों को समझदारी के साथ निपटाया जाना हो।

मेढ़े का मामला ख़त्म हुआ। जानवरों ने अपनी-अपनी राह पकड़ी।

बहरहाल, मेढ़ा घोड़ा के पास पहुँचा और बोला, "सम्मानित घोड़े जी! एक भिन्न जानवर बनने में मेरी मदद कीजिये। अपने नाम का पहला अक्षर मुझे दे दीजिये। मेढ़ा – यह शब्द कितना सामान्य-सा लगता है। घमेढ़ा कहीं अधिक इज़्ज़तदार रहेगा। घमेढ़ा, घऽमेढ़ा, घऽऽमेढ़ा – यह मधुर संगीत-सा लगता है। एक नये निर्दोष जानवर का एक

नया नाम होना चाहिए – एक प्रभावशाली नाम।"

घोड़ा मीनमेखी नहीं था। इस बात से उसे कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता कि उसे घोड़ा कहा जाये या ओड़ा बशर्ते कि काम होता रहे और सब चीज़ें सुचारू ढंग से चलती रहें।

"तुम इसे ले सकते हो, यदि तुम्हें ऐसा लगता है कि अपनी पुरानी चालबाज़ियों से पीछा छुड़ाने में यह तुम्हारी मदद करेगा," घोड़ा हिनहिनाया। उस हिनहिनाहट के बाद वह ओड़ा बन गया और ठीक उसी क्षण एक घमेढ़ा का जन्म हुआ।

अगले दिन परिषद की बैठक में घमेढ़ा उपस्थित हुआ और ज़ोरदार आवाज़ में घोषणा की –

"मैं अब सुधर गया हूँ। मैं एक नया जानवर बन चुका हूँ। मेरा नाम अब घमेढ़ा है। घऽमेढ़ा!"

"ओ-हो!" परिषद के सदस्य चिल्ला उठे।

"घमेढ़ा! कितना शानदार मालूम पड़ता है! वह प्रतिष्ठित और होनहार बन गया है! घमेढ़ा!"

"यह बिना घ वाले किसी घोड़े से यक़ीनन अधिक प्रतिष्ठित है।" किसी ऐसे शख़्स ने कहा जिसे आडम्बरपूर्ण भाषण देना पसन्द था।

"ख़ूब! बहुत ख़ूब।" परिषद ने सहमति प्रकट की। "एक ओड़ा – कितना मामूली-सा लग रहा है।"

"ओड़ा मुर्दाबाद!" भाषण देने वाला चिल्लाया।

"घमेढ़ा ज़िन्दाबाद!"

"घमेढ़ा! घमेढ़ा! घमेढ़ा! परिषद ने राग अलापा। और घमेढ़े को परिषद की सबसे ऊँची कुर्सी तक ले जाया गया।

परन्तु पिल्ले, छुटके से साँड़, बछेड़ी और नन्ही-सी बछिया की मुश्किलें पहले से कहीं अधिक बढ़ गयीं, क्योंकि परिषद का यह फ़ैसला था कि –

"हमारे सम्माननीय घमेढ़े जी महान चिन्तन कर रहे हैं। सँभलकर रहना नहीं तो तुम्हें उनके सींगों का मज़ा चखना पड़ेगा।"

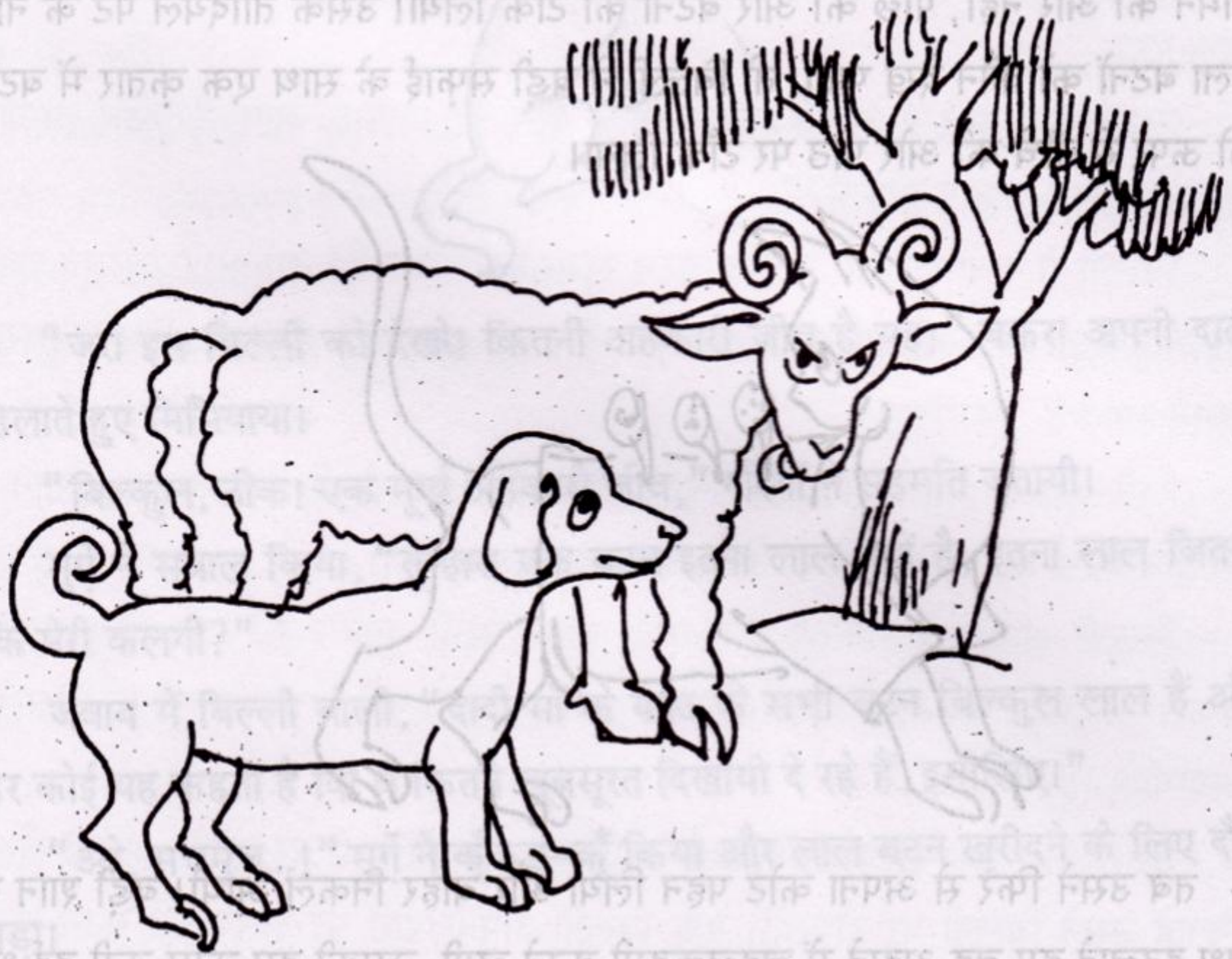

बटन-काज (बटन-होल) पर मचा घमासान

एक बार एक भूरी बिल्ली एक दुकान में पहुँची और तीन बटन ख़रीदे – एक लाल रंग का, एक हरा और एक पीला।

फिर वह जल्दी से घर लौटी। उसने अपना कोट उतारा और सामने की ओर...नहीं सामने की ओर नहीं, पीछे की ओर बटनों को टाँक लिया। उसके तोंदियल पेट के नीचे भला बटनों को कौन देख पाता। तो बिल्ली ने बड़ी सफ़ाई के साथ एक क़तार में बटनों को ऊपर से नीचे की ओर पीठ पर टाँक लिया।

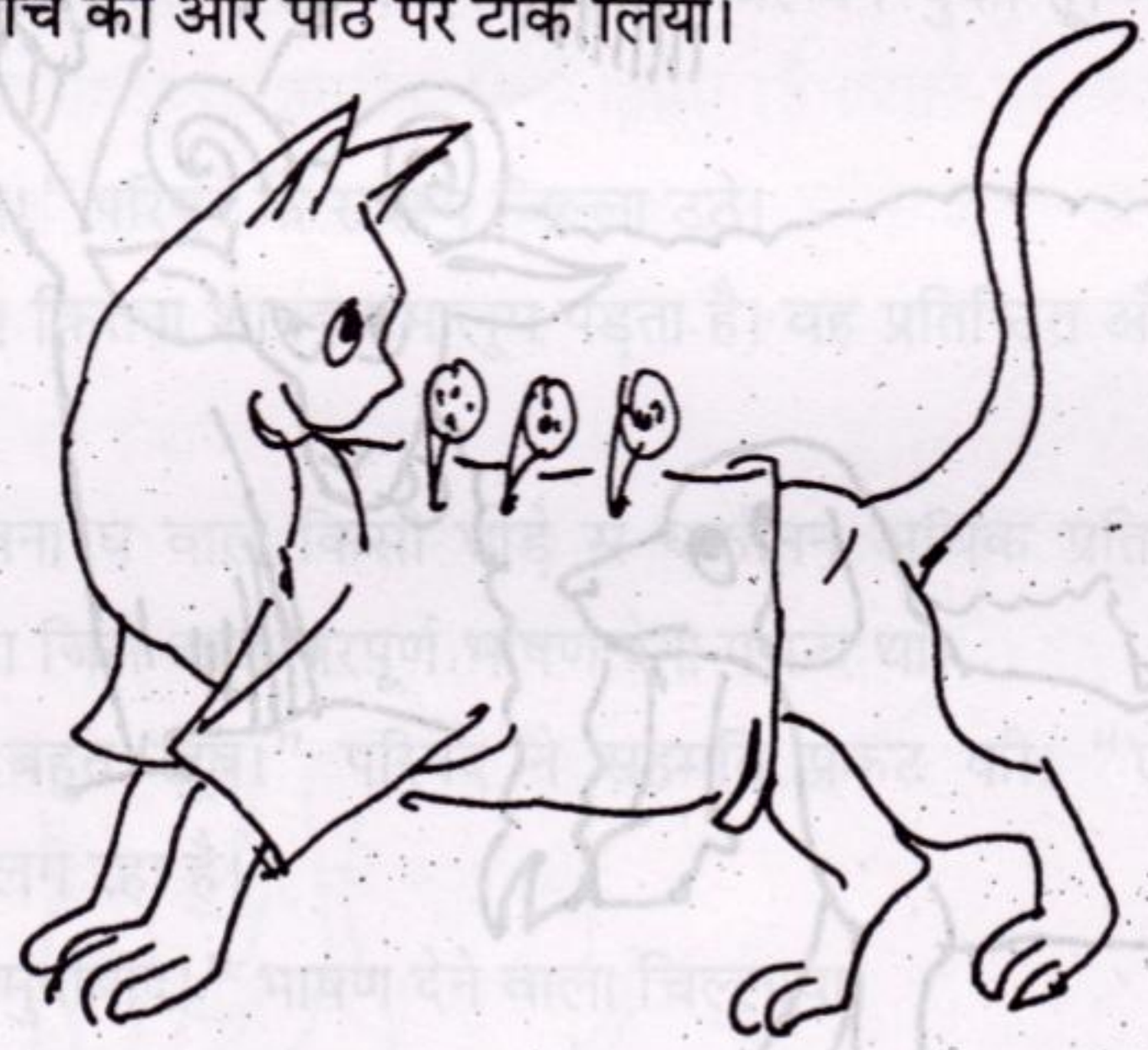

तब उसने फिर से अपना कोट पहन लिया और बाहर निकल आयी। बड़ी शान के साथ इठलाते हुए वह अहाते में चहलक़दमी करने लगी, उसकी दुम ऊपर उठी हुई थी, उसका गलमुच्छा सीधा तना था। धूप की रोशनी में तीन बटन जगमगा रहे थे। लाल, हरा और पीला रंग कौंध उठता था। पशु अहाते के जानवरों का इस पर ध्यान गया। अहाते के पक्षियों ने इसे ग़ौर किया। सभी बिल्ली के इर्द-गिर्द जुट आये।

"ज़रा इस बिल्ली को देखो! कितनी अहंकारी जीव है यह!" बकरा अपनी दाढ़ी हिलाते हुए मिमियाया।

"बिल्कुल, ठीक! एक मूर्ख अहंकारी जीव," गौरैयों ने सहमति जतायी।

मुर्ग़े ने सवाल किया, "तुम्हारा एक बटन इतना लाल क्यों है, इतना लाल जितनी कि मेरी कलगी?"

जवाब में बिल्ली बोली, "दादी माँ के कोट के सभी बटन बिल्कुल लाल हैं और हर कोई यह कहता है कि वे कितने ख़ूबसूरत दिखायी दे रहे हैं, इसीलिए।"

"अरे, सचमुच...!" मुर्ग़े ने कूँकड़ू-कूँ किया और लाल बटन ख़रीदने के लिए दौड़ पड़ा।

तब भेड़ ने पूछा, "तुम्हारा एक बटन इतना हरा क्यों है, इतना हरा जितनी कि घास?"

बिल्ली ने जवाब दिया, "हमारी मालकिन की पोशाक के सभी बटन बिल्कुल हरे

हैं। और हर कोई यह कहता है कि वे कितने ख़ूबसूरत लग रहे हैं, इसीलिए।"

"में-में-में...!" भेड़ मिमियायी और हरा बटन ख़रीदने भाग चली।

फिर गदहे ने पूछा, "तुम्हारा एक बटन इतना सुनहरा क्यों है, इतना सुनहरा जितना कि मक्के का दाना?"

बिल्ली का जवाब था, "नन्ही लड़की के लिबास पर सभी बटन बिल्कुल पीले हैं और हर कोई यह कहता है कि वे कितने ख़ूबसूरत दिखायी दे रहे हैं, इसीलिए।"

"चीं-पों, चीं-पों," गदहे ने हाँक लगायी और दुलकी चाल से पीला बटन ख़रीदने चल पड़ा।

उसके बाद कुत्ते ने अपनी जुबान खोली और यह जानना चाहा, "तुम्हारे हर बटन का रंग अलग-अलग क्यों है?"

बिल्ली ने जवाब दिया, "लाल बटन ख़ूबसूरत लगता है। हरा भी ख़ूबसूरत लगता है। और पीला बटन भी ख़ूबसूरत लगता है। तीन ख़ूबसूरत बटन मिलकर तिगुने ख़ूबसूरत लगने लगते हैं, इसीलिए।"

"भौं-भौं! तो यह मामला है!" कुत्ता बोला और अगले ही क्षण अलग-अलग रंग के तीन बटनों की ख़रीददारी के लिए वह उड़न-छू हो गया।

बिल्ली अहाते में अकेली बच गयी। बाक़ी सभी दुकान की ओर दौड़ पड़े थे। बकरी भी दौड़ी, गौरैया और यहाँ तक कि छज्जे के नीचे बने अपने मिट्टी के घोंसले से अबाबील भी।

उसी समय एक नीलकण्ठी चिड़ी अपना दुम हिलाते बाड़े पर उतरी। अपनी तौलती निगाहें उसने बिल्ली पर दौड़ायीं। एक बिल्ली अपनी पीठ पर चमचमाते बटन लगाये हुए? भला किसलिए?

नीलकण्ठी फुदककर और नज़दीक आ गयी, बटनों को तोड़ा और जल्दी से अपने घोंसले में वापस उड़ गयी।

एक-एक करके अहाते के पशु और पक्षी दुकान से लौटने लगे। सभी बटनों से अटे-पटे थे। कुछ के पास लाल बटन थे, कुछ के पास हरे तो कुछ के पास पीले और कुछ के पास अलग-अलग रंगों के बटन थे। सूरज की रोशनी में सारे झलमला रहे थे।

जैसे ही बकरे की बिना बटन वाली बिल्ली पर नज़र पड़ी वह बोल उठा, "में-में-..., इस बिल्ली को तो देखो ज़रा! ख़ूबसूरती के बारे में भला यह जानती ही क्या है! भूरी ऐसी जैसे बेलचे-भर राख!"

गौरैया एक स्वर में चहचहाने लगी! "ख़ूबसूरती के बारे में भला यह क्या जानती है। कुछ-भी-नहीं!"

नीलकण्ठी बाड़े पर उतरी। अपनी दुम हिलायी। उन सभी पर अपनी आँकती नज़र दौड़ायी। ऐसी झलमलाहट देखकर वह जल-भुन गयी। भयंकर रूप से जल-भुन गयी। आख़िरकार वह अपने को रोक नहीं पायी।

"सुनो, सज्जनो! तुम्हारे पास बटन तो है, पर बटन-काज तुम्हारे पास नहीं है। नहीं है, नहीं है...।"

"उसकी हमें कोई ज़रूरत नहीं। वह हमारे किसी काम की नहीं," सभी ने विरोध प्रकट किया।

नीलकण्ठी हँस पड़ी और मगन होकर चहकने लगी, "तब तो बटन भी तुम्हारे किसी काम का नहीं! किसी काम का नहीं किसी काम का नहीं!"

सभी चुप हो गये।

पर वह जगमगाहट?

और वह ख़ूबसूरती?

और वह शानो-शौक़त?

यह तमाम जगमगाहट और ख़ूबसूरती...और शानो-शौक़त सब एक साथ?

"भौं-भौं...बात तो ठीक है।" अन्त में कुत्ते ने कहा। "मैं तुम लोगों के लिए तुम्हारे

कोटों में बटन-काज का चीरा लगा दूँगा।" और उसने मुस्तैदी से अपने दाँत फाड़े।

"और मैं अपनी चोंच धँसाकर बटन-काज बना सकता हूँ, कूँकड़ू-कूँ!" मुर्ग़े ने बाँग दी और अपनी चोंच उठायी।

"अच्छा, तो तुम मेरे कोट के पीछे पड़े हो! यह सब नहीं चलेगा।" गदहे ने दुलत्ती झाड़नी शुरू कर दी।

"कोशिश करो, मुझे चोंच मारके देखो, अभी पता चल जायेगा तुम्हें," बकरे ने अपना सींग डरावने अन्दाज़ में लहराया।

और भयंकर चीख़-पुकार मच गयी। एक सच्चा बटन-काज संग्राम। पंख, रोयें और बटन सब हवा में उड़ रहे थे। सिर्फ़ भूरी बिल्ली अलग-थलग बची रह गयी।

नीलकण्ठी ने सब चमकते बटन उठा लिये। उठाकर उन्हें अपने घोंसले में ले आयी।

और आज तक अहाते का कोई भी जानवर या पक्षी यह नहीं जान पाया कि ख़ूबसूरती बटन से शुरू होती है या बटन-काज से।

तेज़ दिमाग़

पापा ख़रगोश अपने बेटे को पढ़ा रहे थे, "दो दुनी चार होता है।"

नन्हे बन्नी ने कोई जवाब नहीं दिया। उसने इस बात को सैकड़ों बार सुन रखा था।

पापा ख़रगोश ने पूछा, "अच्छा तो बेटे, दो दुनी कितना होता है?"

"एक," बेटे ने गर्दन घुमाकर जवाब दिया।

"एक, तुम्हारा मतलब क्या है? चार होता है। यह तुम्हें याद क्यों नहीं रहता?" ख़रगोश पापा का पारा चढ़ने लगा था।

"एक," बेटे ने हठपूर्वक कहा। उसे अब बस ज़िद्द चढ़ गयी थी।

"तुम सब गड़बड़ कर रहे हो," पापा ख़रगोश बहुत नरमी से बोले, "अच्छा देखो,

ये हैं तुम्हारे आगे के दो पैर? और ये रहे तुम्हारे पिछले दो पैर। क्या ये दो दुनी मिलकर चार पैर नहीं बनते, ठीक है न? तो तुम्हारे पास कुल कितने हुए? चार! तुम्हारे पास चार पैर हुए, हुए न?"

अपनी आँखों में चमक लिये हुए नन्हा बन्नी अड़ गया, "मेरे पैर तो चार ही हैं। परन्तु दो गुणे दो पैर मिलकर एक बनता है।"

"तुम्हारा दिमाग़ फिर गया है," ख़रगोश पापा ने हताश होकर कहा।

"नहीं, मेरा दिमाग़ नहीं फिरा है।" नन्हा बन्नी चिल्लाया।

"दो गुणे दो ख़रगोश के पैर मिलकर एक ख़रगोश बनता है।"

"ऐसा तुम कैसे कह सकते हो?"

ख़रगोश पापा के कान खड़े हो गये।

"बिल्कुल सीधी-सी बात है," नन्हे बन्नी ने बड़े रोब से समझायी। "अकेले पैरों का कोई मतलब नहीं। जब मैं तुमसे कहता हूँ – भेड़िया के चार पैर तो तुम्हारे कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। परन्तु जब मैं कहता हूँ – एक भेड़िया! – तब तुम पलक झपकते ही सर पर पाँव रखकर भाग खड़े होते हो!"

"ख़बरदार, अपनी ज़ुबान को लगाम दो! मत भूलो कि तुम अपने पिता से बात कर रहे हो," पापा ख़रगोश को गुस्सा आ गया था।

"दो दूनी यक़ीनन एक होता है! यह बिल्कुल दिन के उजाले की तरह साफ़ है!"

पापा ख़रगोश कुछ अपने में ही बुदबुदाते और वहाँ से फुदकते हुए हट गये। उन्हें कहीं भी चैन नहीं मिल रहा था। उनकी खाने-पीने की इच्छा मर गयी थी। वह बस सोच रहे थे और सोचे जा रहे थे। और जितना ही अधिक वह सोचते उतना ही अधिक वह इस बात के क़ायल होते जा रहे थे कि उनके बेटे के पास अपने कन्धों के ऊपर एक तेज़ दिमाग़ था। एक तेज़ दिमाग़! दो पहिया दूना हो तो बनता है – बस चार पहिया। लेकिन जब तुम कहते हो – एक कार – तो क़िस्सा बिल्कुल दूसरा ही होता

है। कार भयंकर आँखों वाला एक दानव है जो रात के समय तुम्हें सड़क पर मज़े से कुचलकर निकल जाता है।

हाँ, लड़का होशियार है, बहुत होशियार।

ख़रगोश पापा विद्वान ख़रगोशों के परिषद की ओर इतनी तेज़ी के साथ भाग चले जितनी कि उनकी टाँगें उन्हें ले जा सकती थीं। उन्होंने अपने पिछले पैर से ठोकर मारकर दरवाज़ा खोल दिया। और एक ही छलाँग में वह अध्यक्ष के सामने जा पहुँचे।

उनके शब्द धारा-प्रवाह फूटने लगे। अध्यक्ष जी सिर हिलाने के सिवाय कुछ कर ही न सके। सचमुच, छोकरा तेज़ लगता है। इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं, जब कि उसका बाप खुद ही ऐसा कह रहा हो। अगले दिन नन्हे बन्नी को विद्वान ख़रगोश का दर्जा दे दिया गया।

बहरहाल, पहाड़े की तालिका में लाल रंग की रोशनाई से एक संशोधन किया गया : दो दुनी एक। इसके पिछले तरफ़ हाशिये पर दो अक्षर अंकित हुए त और द। मतलब तेज़ दिमाग़। अब से बन्नी की यह मानद उपाधि थी।

शरद ऋतु आ गयी। यह जाड़े के लिए अनाज बाँटने का समय था। बन्नी देश में सभी को बन्दगोभी के दो बोरे प्रति ख़रगोश के हिसाब से मिलता था।

एक सम्मानित दिखने वाला ख़रगोश जोड़ा सामुदायिक भण्डारघर पहुँचा। आपका मिजाज़ कैसा है? देखिये हम लोग आ गये अपने दो-दो बोरों के साथ...

भण्डार अध्यक्ष ने अपनी पहाड़े की तालिका मेज़ पर फटाक से खोली। वह मोटे लाल अंकों में बता रहा था कि दो दुनी एक होता है। और बूढ़े ख़रगोश दम्पति को बन्दगोभी का कुल एक ही बोरा मिल सका।

दूसरे जोड़े को भी एक ही बोरा मिला।

इसी प्रकार तीसरे-चौथे को भी।

पाँचवें की क़िस्मत भी इससे बेहतर नहीं रही।

तथा छठा और सातवाँ भी...

बड़े दिन के बहुत पहले से ही समूचा बन्नी देश भूखों मरने लगा था। जब तक बसन्त ऋतु आयी, तब तक यह देश ही न रहा। कुछ ने अपने देश में ही भूख से दम तोड़ दिया और कुछ ऐसी जगहों की तलाश में चले गये, जहाँ अभी दो दुनी चार होता था।

तेज़ दिमाग़ ही एकमात्र ऐसा शख़्स था। जिसने कोई तकलीफ़ नहीं झेली। वह दूसरे ख़रगोश-देशों में अपनी अद्‌भुत खोज पर व्याख्यान देता हुआ घूमता रहा। और इस विद्वान अतिथि को हमेशा ही खाने के लिए जायक़ेदार निवाला पेश किया गया जिसका आनन्द निस्सन्देह वह भरपेट उठाता था।

झाड़ू और फावड़ा

फावड़ा खुदाई करते-करते तंग आ चुका था। वह मिट्टी के ढेर से कूद पड़ा और झाड़ू से बोला, "मैं भी बुहारना चाहता हूँ।"

"तो बुहारते क्यों नहीं," झाड़ू ने कहा।

फावड़ा लम्बे डग भरता हुआ सड़क पर जा खड़ा हुआ और अपने को दाहिने घुमाया और बायें घुमाया। फिर दाहिने घुमाया और बायें घुमाया। फावड़े का सिरा बिछे बटिया पत्थरों से इतनी ज़ोर से टकराता कि चिंगारियाँ उड़ने लगतीं। जब फावड़े ने खुद को काफ़ी थका डाला, तब वह रुक गया और झाड़ू से चिल्लाकर बोला, "देखा तुमने मैंने कितनी मेहनत से काम किया?"

"हाँ, देखा," झाड़ू ने जवाब दिया। "चारों तरफ़ चिंगारियाँ ही चिंगारियाँ छिटक रही थीं! अब किनारे हटो! मुझे सड़क को साफ़ करना है।"

"चलो हम दौड़ लगायें!" झाड़ू ने फावड़े से कहा। "तुम खुदाई करो और मैं बुहारू करता हूँ।"

"क्यों नहीं!" फावड़े ने जवाब दिया।

झाड़ू बुहारू करने में जुट गयी। जल्दी ही उद्यान की बल खाती हुई पगडण्डी एकदम साफ़-सुथरी हो गयी।

फावड़े ने मेहनत से खुदाई की। और जल्दी ही मैदान में एक गहरा, बड़ा गड्ढा बन गया।

परन्तु झाड़ू और फावड़ा यह निर्णय नहीं कर पाये कि उनमें से विजेता कौन है। उन्होंने काफ़ी सोचा, लेकिन किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सके। एक लम्बी साफ़-सुथरी पगडण्डी और एक गहरा बड़ा गड्ढा – अब सुलझाने की कोशिश करो कि कौन बेहतर कामगार है।

प्रतियोगिता स्थल पर उद्यान का रखवाला नमूदार होता है।

"कितना सुन्दर साफ़-सुथरा मार्ग है," वह खुश होकर बोला। परन्तु दूसरे ही क्षण वह नाक-भौं सिकोड़ने और डाँटने लगा।

"किसने मार्ग के बीचोबीच गड्ढा खोद डाला है?"

फावड़े ने निःश्वास भरी और विजेता को बधाई दी।

"सुनो, झाड़ू," सायबान के कोने में बेकार पड़े फावड़े ने कहा। "तुम्हारे पास दो बँधनी है। एक मुझे दे दो।"

"किसलिए चाहिए तुम्हें?" झाड़ू ने पूछा।

"मेरी पत्ती डगमग-डगमग करने लगी है। मैं बँधनी से इसे ठीक करूँगा तब मैं फिर से खुदाई कर सकता हूँ," जवाब मिला।

"मेरे पास दो बँधनी है...उसके पास एक भी नहीं...यह सचमुच उचित नहीं है..." झाड़ू ने सोचा और फावड़े को एक बँधनी दे दी।

फावड़े ने बँधनी को अपने हत्थे पर सरका लिया। परन्तु इससे कोई मदद न मिली। बेंत की बँधनी से फावड़े को कसा नहीं जा सकता। वह अभी भी डगमगा रहा था और खोदने के लायक़ न रहा।

झाड़ू ने बुहारना शुरू किया। परन्तु उसकी मूठ भी डगमग करने लगी थी। एक ही बँधनी उसको ठीक जगह पर नहीं रख पा रही थी। झाड़ू बुहारने योग्य न रही।

अब दोनों ही सायबान के कोने में बेकार पड़े हैं।

पहिये

1

किसी समय में दो पहिये वाली एक छकड़ा गाड़ी थी। उसमें एक पहिया नया था और मगन होकर मज़े से घूमता। दूसरा पुराना था, और दयनीय ढंग से चरमराता और चूँ-चूँ करता।

"आह, मैं चल नहीं सकता..." पुराना पहिया कराहा।

"रोना-धोना बन्द करो और तेज़ गति से चलो," नये पहिये ने फटकार लगायी।

"थोड़ा धीरे-धीरे चलें," पुराने पहिये ने विनती की।

"तुम्हारी वजह से मैं अपनी रफ़्तार धीरे नहीं करने वाला," नया पहिया तिरस्कारपूर्वक चिल्लाया। और वह पहले से भी तेज़ घूमने लगा। दुखपूर्वक चूँ-चूँ करते

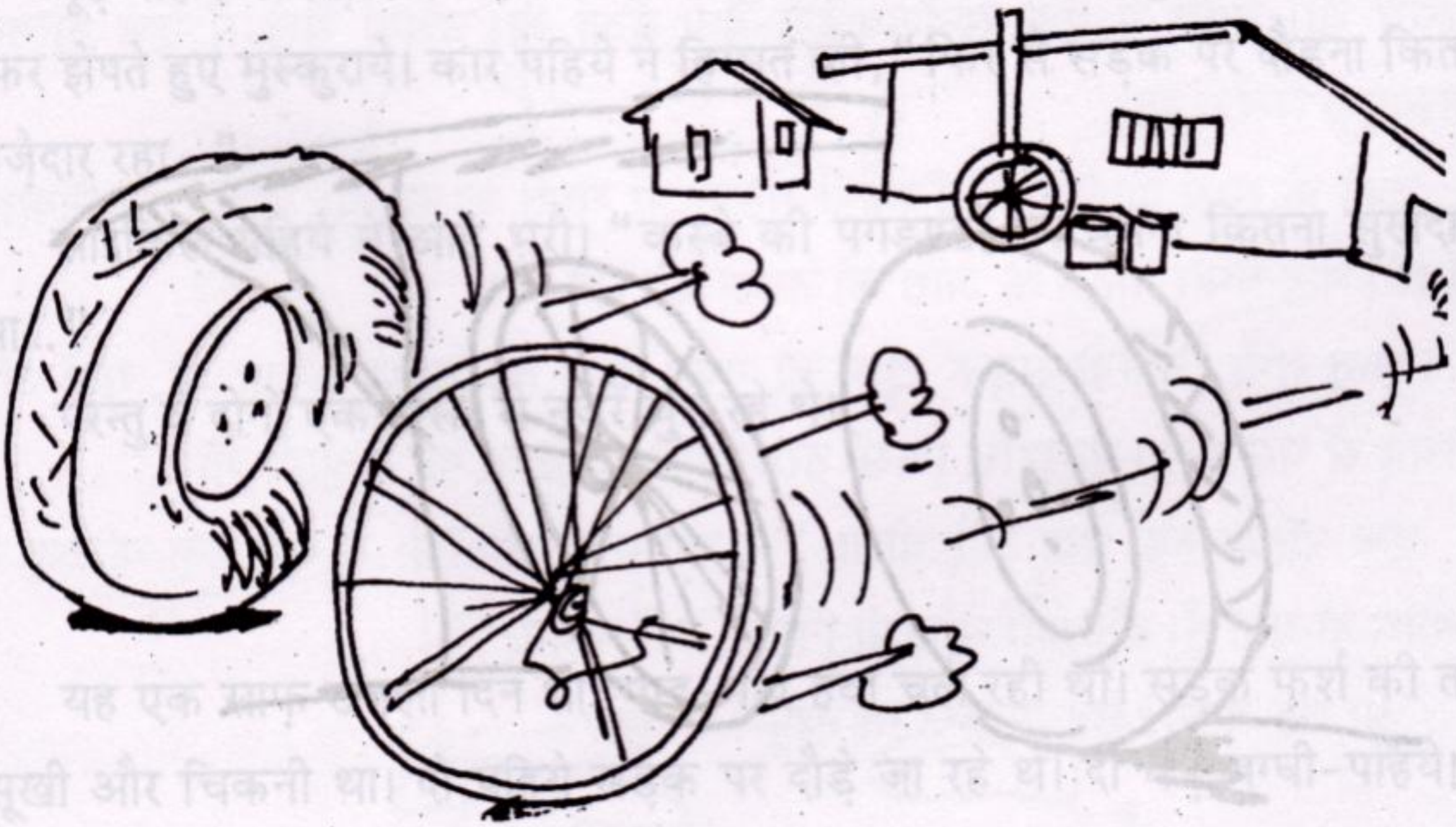

हुए पुराने पहिये ने दूसरे के साथ गति बनाये रखने की भरसक कोशिश की। तभी एक धड़ाका हुआ। छकड़ा धीरे-धीरे एक ओर को झुका और रुक गया। पुराना पहिया ढह गया था। नये ने चलने की बहुत कोशिश की, लेकिन एक चक्कर भी न घूम पाया। छकड़ा टस से मस न हुआ।

2

दो उम्रदराज पहिये कारख़ाने की दीवार से टिका कर रखे हुए थे। एक साइकिल का पहिया था, दूसरा गाड़ी का।

अलग-थलग पड़े, वे यूँ समय बिताने के लिए अपना अतीत याद करने लगे।

गाड़ी का पहिया बोला, "मुख्य सड़क पर दौड़ लगाने के क्या मज़े थे... हवा सीटी बजाती थी, टायर सरसराते थे..."

साइकिल के पहिये ने कहा, "क़स्बे की अद्‌भुत सड़कों पर घूमना कितना सुहावना था, चिड़िया चहचहाती थी, पेड़ कानाफूसी करते थे।"

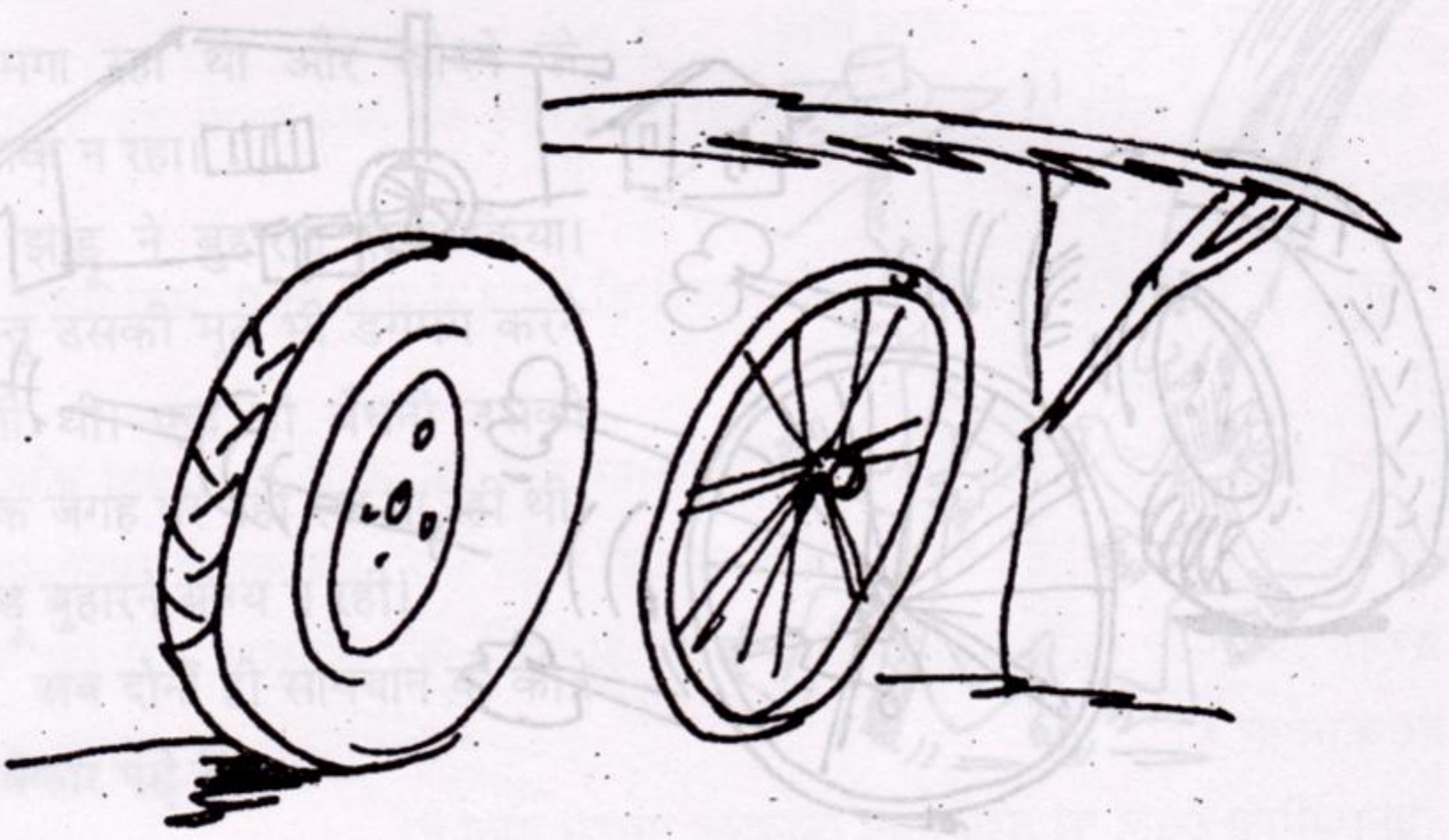

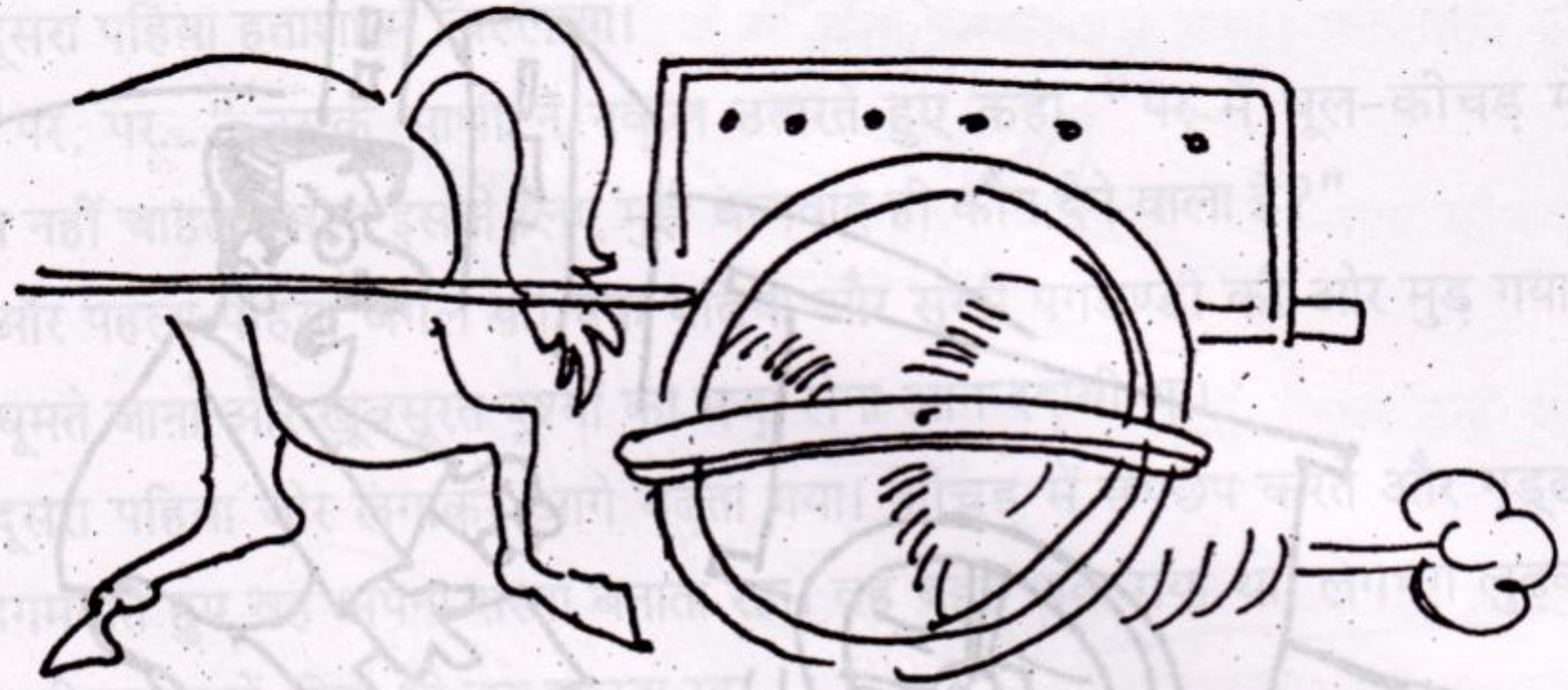

फिर कारीगर ने कार पहिये को कार में व साइकिल पहिये को साइकिल में लगा दिया। और दोनों वाहन चल पड़े। परन्तु गाड़ी का पहिया खड़खड़ करता और डगमगाता। वह बिल्कुल बेकार हो चला था। साइकिल पहिये की हालत भी इससे बेहतर नहीं थी।

कारीगर सिर हिलाते हुए अपना औजार ढूँढ़ने चला गया।

बूढ़े पहिये कारख़ाने की दीवार पर फिर से एक बार मिले। वे कुछ देर तक चुप रहे, फिर झेंपते हुए मुस्कुराये। कार पहिये ने हिम्मत की, "फिर से सड़क पर दौड़ना कितना मज़ेदार रहा..."

साइकिल पहिये ने आह भरी। "क़स्बे की पगडण्डी पर घूमना कितना सुखदायी था..."

परन्तु वे दोनों एक-दूसरे से नज़रें चुरा रहे थे।

3

यह एक साफ़ उजला दिन था। मन्द-मन्द हवा चल रही थी। सड़क फ़र्श की तरह सूखी और चिकनी था। दो पहिये सड़क पर दौड़े जा रहे थे। दो बड़े बग्घी-पहिये! वे

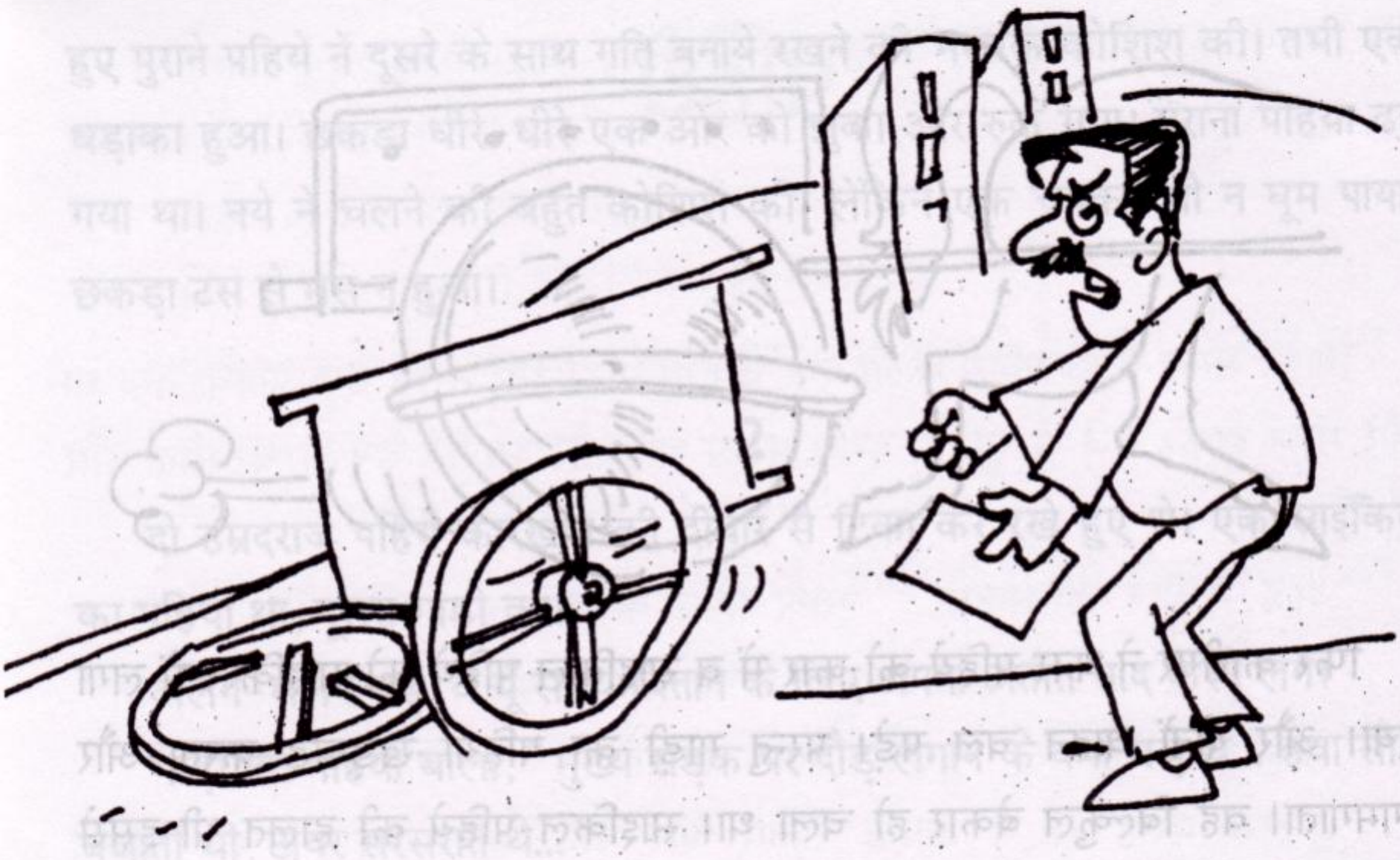

सरपट भाग रहे थे, क्योंकि कोई उनका इन्तज़ार कर रहा था। घोड़ों ने छलाँग लगायी थी और एक बग्घी को पटरी से नीचे उतार फेंका था... अब दो नये पहियों की झटपट ज़रूरत थी। बग्घी में एक सन्देशवाहक बैठा हुआ था। उसके थैले में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सन्देश था।

तेज़ी के साथ दोनों पहिये चिकनी सड़क पर घूमते जा रहे थे। चटख धूप निकली हुई थी। मन्द बयार पहिये के आरा को ठण्डा कर रही थी।

परन्तु तभी चिकनी सड़क ख़त्म हो गयी। आगे का रास्ता कच्चा था, गढ़ों और कीचड़ से भरा हुआ। बहरहाल किसी तरह बग्घी यहाँ तक पहुँच आयी थी।

एक पहिया रुक गया और बोला, "मैं आगे नहीं जाऊँगा! मैं धुरी तक कीचड़ से लथपथ हो गया हूँ। हम यहाँ से कभी निकल नहीं पायेंगे।"

"पर वह बग्घी? वह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सन्देश?"

दूसरा पहिया हताशा में चिल्लाया।

"पर, पर..." उसके साथी ने नक़ल उतारते हुए कहा, "पर मैं धूल-कीचड़ में सड़ना नहीं चाहता। भला इसके लिए मुझे धन्यवाद ही कौन देने वाला है?"

और पहला पहिया जंगल की एक बढ़िया और सूखी पगडण्डी की ओर मुड़ गया। वहाँ घूमते जाना और ख़ूबसूरत दृश्यों का मज़ा लेना आनन्ददायी था।

दूसरा पहिया ज़ोर लगाकर आगे बढ़ता गया। कीचड़ में छपछप करते और गड्ढों पर डगमगाते हुए वह अपना रास्ता बनाता रहा। वह बहुत थक गया था, लगभग लुढ़क पड़ने की हालत में, फिर भी वह चलता रहा...

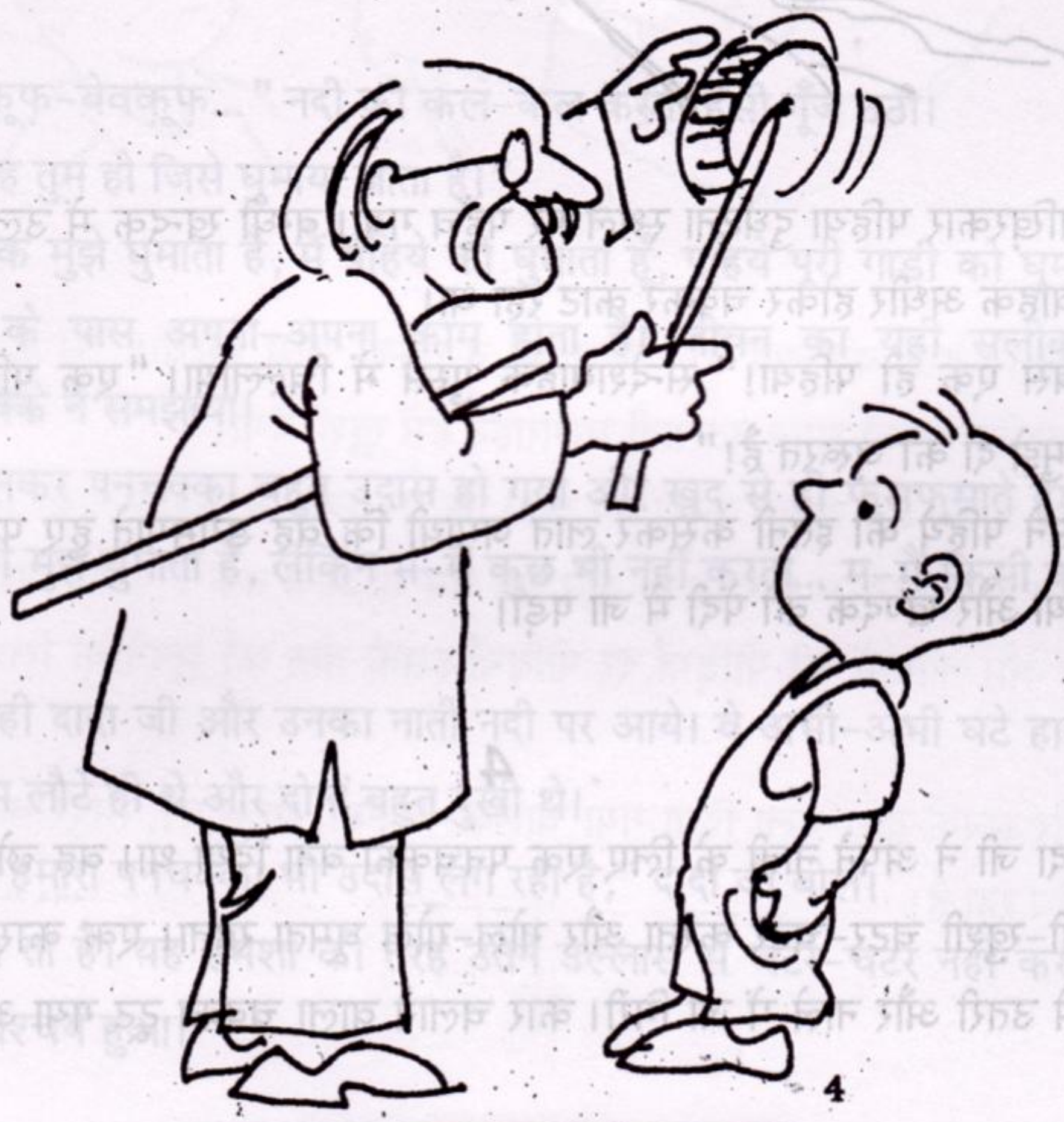

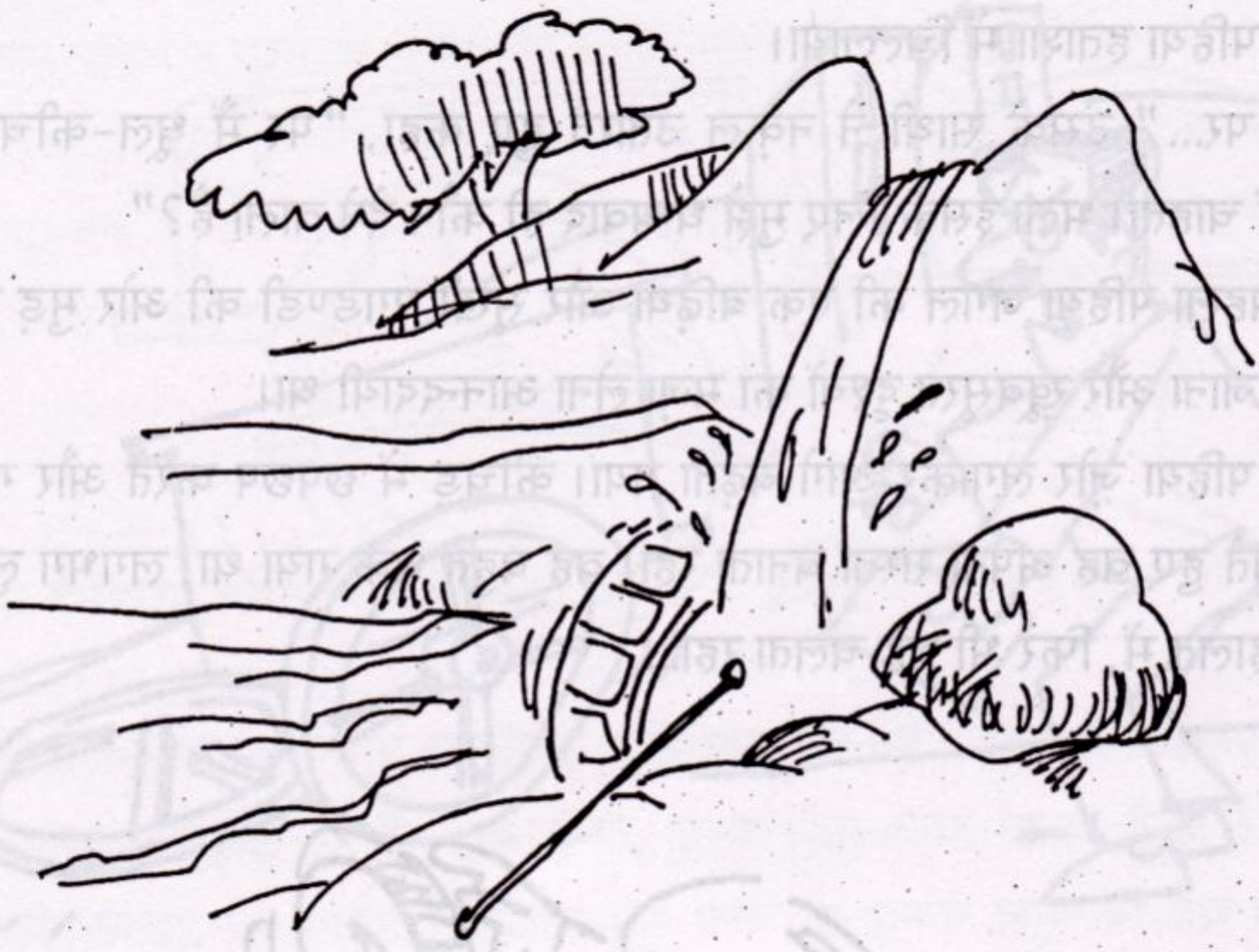

आख़िरकार पहिया दुर्घटना स्थल पर पहुँच गया। बग्घी खन्दक में उलट गयी थी, सन्देशवाहक अधीर होकर चक्कर काट रहा था।

"बस एक ही पहिया!" सन्देशवाहक गुस्से में चिल्लाया। "एक पहिये से क्या होगा? मुझे दो की ज़रूरत है!"

उसने पहिये को इतनी कसकर लात जमायी कि वह डगमगाते हुए पटरी से नीचे उतर गया और खण्दक की पेंदी में जा पड़ा।

4

दादा जी ने अपने नाती के लिए एक पनचक्का बना दिया था। वह छोटी-सी नदी में खुशी-खुशी चटर-चटर करता और गोल-गोल घूमता रहता। एक कार सड़क की पटरी से उतरी और नाले में जा गिरी। कार चलाने वाला चक्का टूट गया और लुढ़कते

हुए नदी के किनारे मिदुर की झाड़ियों में चला आया। इस प्रकार पनचक्का और चालन-चक्का की मुलाक़ात हुई।

"न-नमस्ते! स्-स्वागत है," पनचक्का तुतलाते हुए बोला। "आ-आप कौन हैं? क-कहाँ से आये हैं?"

"मैं चालन-चक्का हूँ। मैं कार के पहियों को उधर घुमाता हूँ, जिधर उन्हें जाना होता है," चालन पहिये ने जवाब दिया।

"तब तुमने कार को नाले में क्यों गि-गिरा दि-दिया?" पनचक्के को आश्चर्य हुआ।

"मैंने नहीं," चालन-चक्के ने गुस्से से कहा। "उस बुड्ढे बेवक़ूफ़, ड्राइवर ने गिराया।"

"बेवक़ूफ़-बेवक़ूफ़..." नदी की कल-कल करती हँसी गूँज उठी।

"तो यह तुम हो जिसे घुमाया जाता है।"

"चालक मुझे घुमाता है, मैं पहिये को घुमाता हूँ, पहिये पूरी गाड़ी को घुमाते हैं... हम सभी के पास अपना-अपना काम होता है। जीवन का यही सलीका है," चालक-चक्के ने समझाया।

यह सुनकर पनचक्का बहुत उदास हो गया और खुद से ही फुसफुसाते हुए कहने लगा, "पानी मुझे घुमाता है, लेकिन म-मैं कुछ भी नहीं करता... म-मैं किसी काम का नहीं हूँ..."

जल्दी ही दादा जी और उनका नाती नदी पर आये। वे अभी-अभी घटे हादसे की जगह से बस लौटे ही थे और दोनों बहुत दुखी थे।

"सुनो! हमारा पनचक्का भी उदास लग रहा है," दादा जी बोले।

"उदास तो है। यह हमेशा की तरह उतने उल्लास से चटर-चटर नहीं कर रहा," नाती को आश्चर्य हुआ।

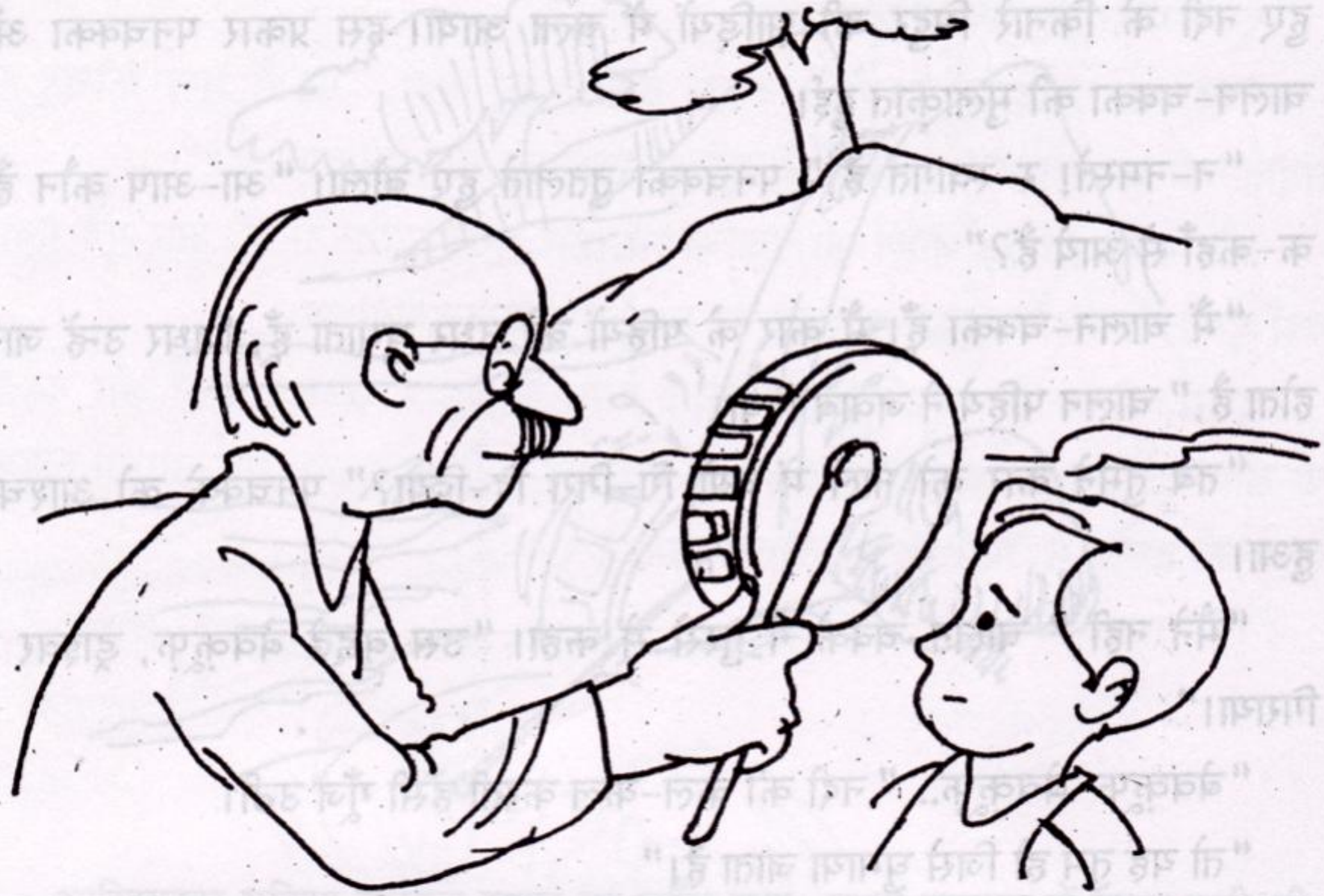

"कितने दुख की बात है!" दादा जी ने लम्बी साँस खींची।" मैं सचमुच आशा करता था कि इसकी मगन तुतलाती मरमराहट हमें खुशी देगी।"

दादा जी ने जैसे ही इन शब्दों को कहा कि पनचक्के ने खुशमिजाज़ी से भरा अपना गीत फिर से गाना शुरू कर दिया। और वह तब से आज तक लगातार गाये जा रहा है। दादाओं और नातियों की पीढ़ियाँ दर पीढ़ियाँ इसके गीत को सुनने के लिए यहाँ आती रही हैं।

और सबके द्वारा भुला दिया गया चालक-चक्का, बहरहाल, मिदुर की झाड़ियों में पड़ा ऊँघ रहा है।

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ